

फ्रांसीसी क्रांति के सांस्कृतिक पहलू

डा. देवश विजय
(सह-आचार्य, ज़ाकिर हुसैन दिल्ली कॉलेज)

द्वारा प्रस्तुत

सचित्र व्याख्यान

जीवन पर्यन्त अध्ययन संस्थान
दिल्ली विश्वविद्यालय
के इतिहास पाठ्यक्रम हेतु

(मार्च, 2016)



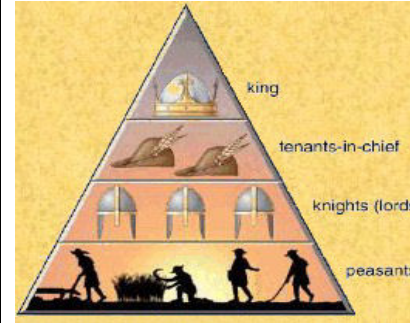
1) फ्रांसीसी क्रांति का महत्व:-

सदियों पुरानी आंसियाँ रेजीम का अन्त; बूर्बो वंश के साथ निरंकुशवाद और सामंतवाद का ध्वंस; पादरी तंत्र को चुनोती और नागरिकों की समानता और मानवाधिकारों की घोषणा.

स्वतंत्रता, समानता, राष्ट्रियता और आंदोलनों का पूरे यूरोप पर असर.

प्रतिक्रियावाद के बावजूद जन-क्रांतियों का सैलाब आधी शताब्दी के लिए कायम. यूरोप में स्वतंत्रता और समानता के लिए बगावतें पहले भी हुई; पर, हाल की आंग्ल और अमरीकी क्रांतियों समेत, शासकों में भय और जनता में जागृति इतने बड़े स्तर पर कभी नहीं दिखी. क्रांति दस वर्षों चली पर उपलब्धियां डो वर्षों में राजनीति करवटें बदलती रही: पर 1789 का वैचारिक और सांस्कृतिक असर पूरे यूरोप को नये युग की ओर मोड़ गया.

सामंती पदानुक्रम



1792 का पलट



मानवाधिकार घोषणा

१८४८ तक क्रांतियाँ का ज्वार



2) क्रांति का बदलता इतिहासलेखन

ऐसी इंकलाबी घटना पर, 18वीं शताब्दी से ही बहुत कुछ लिखा गया है; बर्क, पेन और तोक्योवी से लेकर लेफ्रेब्र और फ्युरे तक, परंतु कई दशकों तक, क्रांति के राजनीतिक और आर्थिक पहलुओं पर जितना ध्यान गया उतना सांस्कृतिक प्रयोगों पर नहीं इसका एक कारण संस्कृति का अपरिमेय स्वरूप है: साथ ही, राजनीतिक और आर्थिक निर्णायकवाद ने भी संस्कृति को इतिहासलेखन में ग्रंथों के अंतिम अध्यायों तक सीमित रखा पर, हाल के वर्षों में नव-सांस्कृतिक इतिहासलेखन ने स्थिति बदलती है; और लिन हंट, फ्युरे इत्यादि ने फ्रांसीसी क्रांति के सांस्कृतिक पहलुओं पर नया प्रकाश डाला है

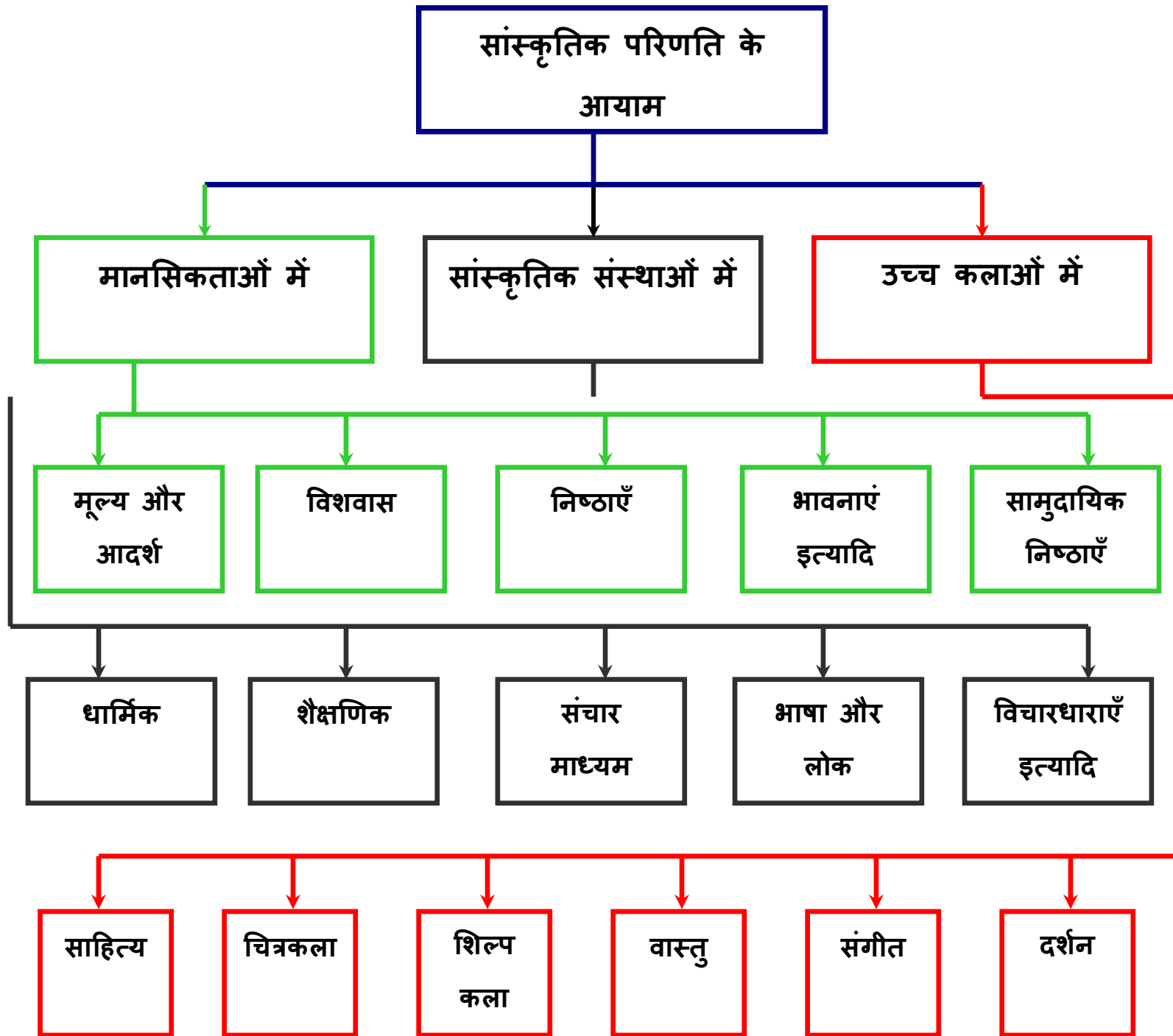
माक्सवादी इतिहासकार: लेफेब्रे व सोबूल



नव-सांस्कृतिक

इतिहासकार फ्युरे व हंट





3) क्रांतिकारी सोच के प्रमुख पहलू:-

निरंकुशवाद का अंत व संवैधानिक शासन पर जोर

कुलीनों के विशेषाधिकारों की समाप्ति.

नागरिकों के समान मानवाधिकार.

नये गंतन्त्रवाद में सब पुरुषों की शासन में भागीदारी; जन प्रतिनिधियों और निर्वाचन का बढ़ता महत्त्व.

प्रबोधन के दार्शनिकों की शासकों से उमीदें गलत थी.

1789 का सामाजिक उलटफेर



टेनिस कोर्ट ओथ

सम्राटों से अपेक्षाएं समाप्त



4) क्रांतिकारी सोच:-

क्रांतिकारी सेक्युलरवाद: सर्वधर्म सम्भाव के स्थान पर परम्पराओं और धर्म पर घोर प्रहार.

पादरियों पर लागू नागरिक शपथ

राष्ट्रवाद: अंतर्राष्ट्रीय भातृत्व और आक्रामक विस्तारवाद के विरोधाभास से भरा साम्यवादी सोच और प्रत्यक्ष लोकतंत्र के प्रयोग



स्वतंत्रता की देवी का आवाहन सामंतों पर हमला



बास्तिये पर आक्रमण

जन-आक्रोश



Pierre-Paul Prud'homme, Liberty, engraving, ca. 1793. Courtesy: Musée Carnavalet, Paris, photo: Philippe Comandant



5) नई सोच की अवधारणाएं और सीमाएं राज्य के कानूनों से विराट परिवर्तन की आशा; पर अनपेक्षित परिणामों की उपेक्षा और प्रतिक्रियाओं की संभावनाओं की ओर बेपरवाही.

अफसरशाही और कुलीनों की जगह अब जन-प्रतिनिधियों में विश्वास; वाग्मिता की अनदेखी

सक्रिय नागरिकों पर विश्वास और सीमित राजनीतिक रुची की उपेक्षा

जन-आन्दोलन और हिंसा का आह्वान; हिंसा की अग्नी तुल्य प्रकृती की अनदेखी.

तर्कवाद में पूर्ण आस्था; संशयवादी दर्शन से अनभिज्ञता.

सामाजिक ऊँच नीच का विरोध पर व्यक्ति की स्वतंत्रता पर कश्मकश

भ्रात्रित्व भरा राष्ट्रवाद; साथ, ही अन्य देशों पर आक्रमण और कब्ज़ा.

तर्क की देवी का पर्व; स्वतंत्रता, समानता, भ्रातृत्व का नारा

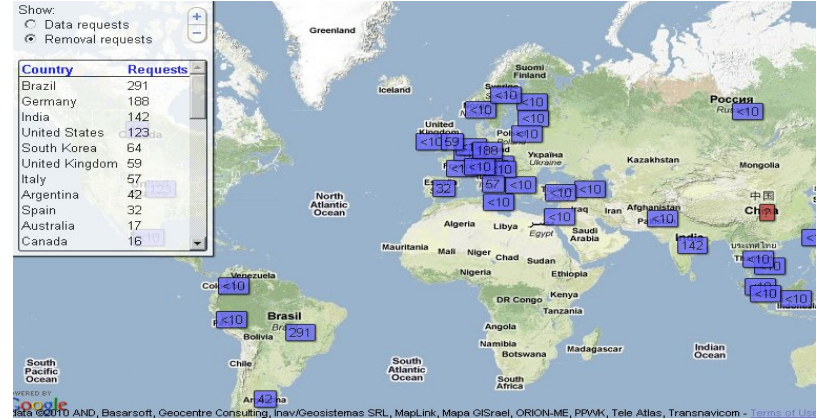


गणतंत्र और लोकतंत्र:-

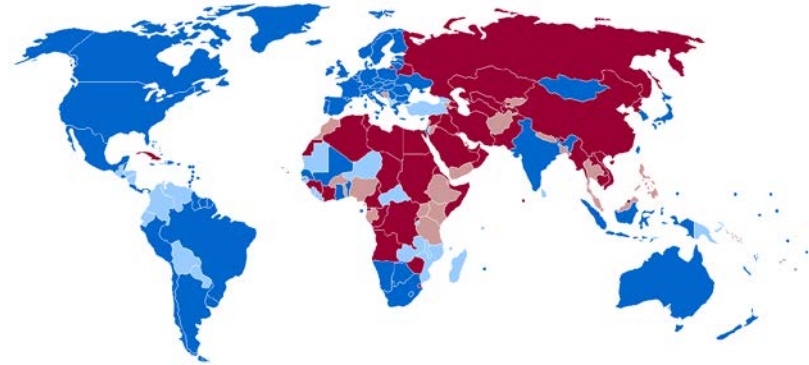
गणतंत्रवाद एवं लोकतंत्र: निर्वाचित
राज्याध्यक्ष एवं पुरुष-मताधिकार एक साथ

सशक्त कार्यपालक का सीधा चुनाव या
राजनीतिक दलों पर निर्भर कार्यपालिका.

विश्व के गणतंत्रों का नक्शा।



आज के प्रजातंत्रों का मानचित्र।



6) क्रांतिकारियों के मतभेद:-

क्रांति के चरम पर भी सभी फ्रांसीसी क्रांति समर्थक नहीं थे. वॉंदे तथा ल्यों जैसे जिलों में पेरिस के तख्ता पलट का सख्त विरोध हुआ.

क्रांतिकारियों में भी, बुर्जुआ, सां कुलोट तथा निम्न वर्गों में निहित अंतर्विरोध.

वॉन्दे का गृह युद्ध तथा शॉ दे मार्स का हत्याकांड।



6) क्रांतिकारियों के मतभेद:-

वैचारिक स्तर पर भी संवैधानिक राजतंत्र, गणतंत्र तथा साम्यवादी व्यवस्थाओं में विश्वास वालों में विभाजन.

गणतंत्रवादी भी फेयों, जिरोंद, जाकोबें तथा ओरांजे जैसे गुटों में विभक्त.

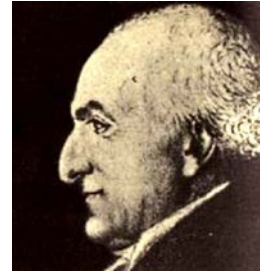
मतभेद केवल विचारों तक ही सीमित नहीं बल्कि तीक्ष्ण कलह और हत्याओं में भी परिणत.

लाफ़ैयत एवं मिराबों



ज़ाक रू तथा ग्राक्यू बाबफ़

ब्रिसो



पॉल मारा की हत्या

जाकोबें और जिरोंदें के विवाद



रॉबिस्पेर

नकारात्मक पहलू:-

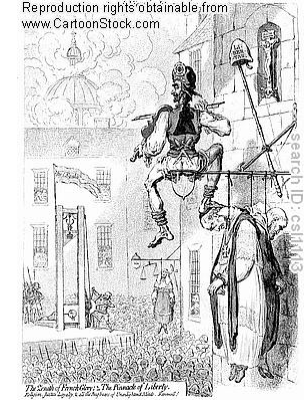
व्यापक हिंसा, राजनीतिक आतंक, तानाशाही लम्बे युद्ध व गृहयुद्ध.

विरोधियों के अतिरिक्त सहयोगियों की भी हत्याओं का कुचक्र.

1789 से 1799 के बीच करीब 10 लाख फ्रांसीसियों ने युद्धों में जान गंवायी और 40 हजार मात्र दो वर्षों के 'आतंक के शासन' में मृत्यु दंड के शिकार हुए.

सैं जुस्त तथा पॉल मारा द्वारा घोर हिंसा का आह्वान: राजनीती खून से लाल हो; हजारों सर काटे बगैर स्थिरता संभव नहीं.

हिंसा की अथाह: कर्तन यंत्र व खम्बों से झूलते शव



दाँतों को सज़ाए मौत

रोबिस्पेर की गिरफ्तारी।



नकारात्मक पहलू

भातृत्व के स्थान पर फ्रांस की सेनाओं का पड़ोसी मुल्कों पर अत्याचार .

पेरिस की राज्य व्यवस्था भी अत्यधिक केंद्रीयकृत और समरूपी साबित हुई.

पेरिस की बोली पुरे फ्रांस पर थोपना, प्राचीन पर्वों पर रोक और अल्पसंख्यकों की वेशभूषा आज भी नियंत्रित करना, उदाहरण है.

नेपोलियन का साम्राज्य चित्रकार गोया की कृति



फेत दिये जैसे स्थानीय पर्वों पर पाबंदी;
आज के फ्रांस में भी बुर्का पहनना अवैध घोषित।



7 कुछ नकारात्मक पहलू:-

महिलाओं ने १७८९ की क्रांती में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी. फिर भी, उनके के अधिकारों की मांग करने वाले संगठनों को गंतान्त्रवादियों द्वारा बंद कराया गया और कई नारीवादियों को मौत के घाट उतारा गया.



1789 की घटनाओं में महिलाओं का बड़ा योगदान: वर्साए पर औरतों का कूच।



क्रांति की बली चड़ी कुछ वीरांगनाएं: ओलम्पे दे गूज़,
शार्लो कोर्दे एवं मदाम रोलां।



गणतंत्रवादियों की सफलता के कारण

सां कुलोट अर्थात साधारण पोषाकधारी दुकानदारों एवं कारीगरों की लामबंदी और शासन पर दबाव सम्राट तथा समाजी की नासमझी तथा अलोकप्रियता.

यूरोप भर के सम्राटों का बूर्बों के पक्ष में, फ़्रांस पर, हर तरफ से आक्रमण

स्थिर नेतृत्व के अभाव में, गणतंत्रवादियों द्वारा हर संस्था का वैचारिक क्रांति के लिए उपयोग.

तुइलेरीस के बाग में नरसंहार

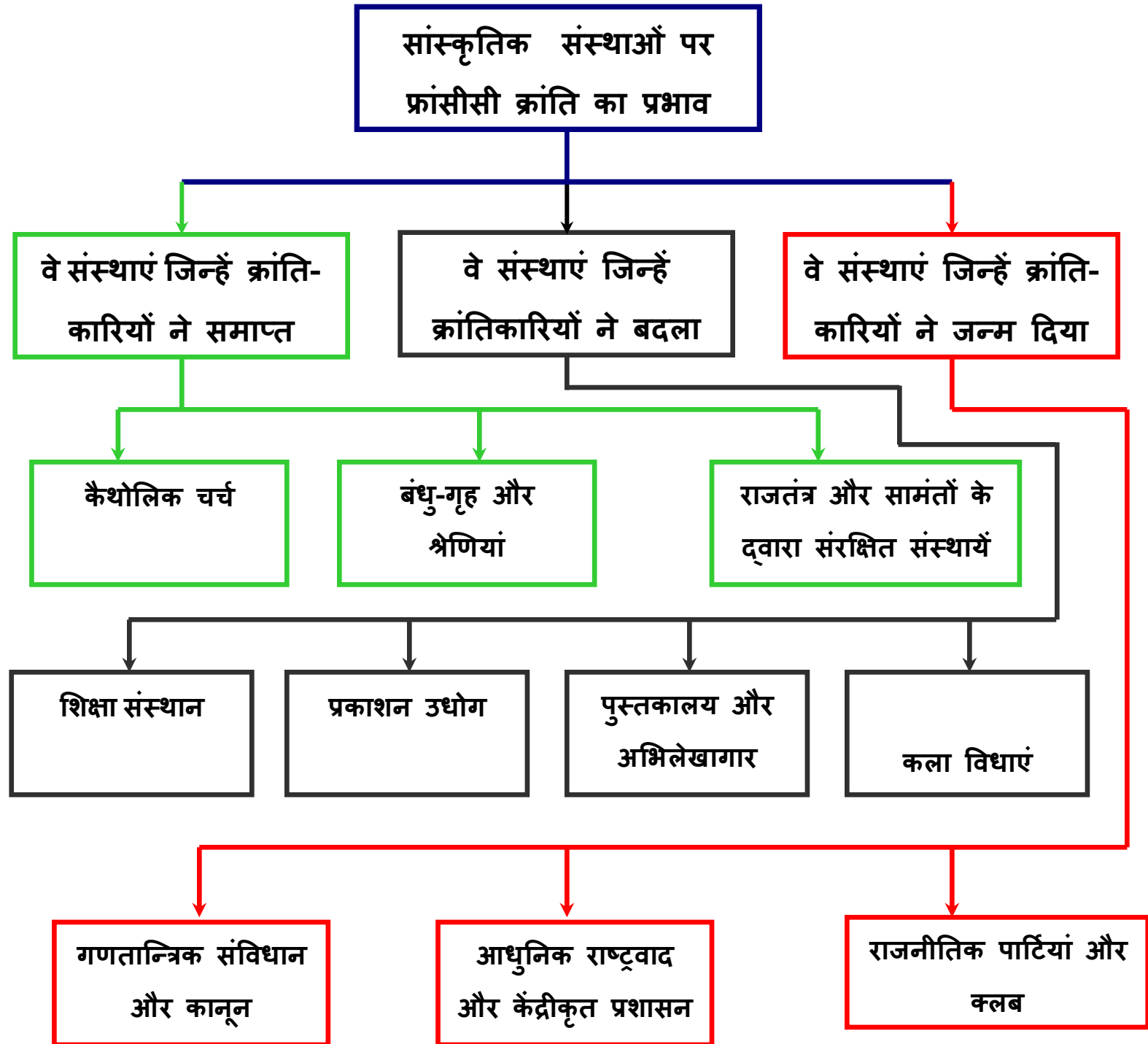


शौं दे मार्स का हत्याकांड।



शाही दंपति का पलायन करते पकड़ा जाना एवं फ़्रांस पर यूरोप के सम्राटों का संयुक्त आक्रमण।





सांस्कृतिक संस्थाओं पर
फ्रांसीसी क्रांति का प्रभाव

वे संस्थाएं जिन्हें क्रांति-
कारियों ने समाप्त

वे संस्थाएं जिन्हें
क्रांतिकारियों ने बदला

वे संस्थाएं जिन्हें क्रांति-
कारियों ने जन्म दिया

कैथोलिक चर्च

बंधु-गृह और
श्रेणियां

राजतंत्र और सामंतों के
द्वारा संरक्षित संस्थायें

शिक्षा संस्थान

प्रकाशन उद्योग

पुस्तकालय और
अभिलेखागार

कला विधाएं

गणतान्त्रिक संविधान
और कानून

आधुनिक राष्ट्रवाद
और केंद्रीकृत प्रशासन

राजनीतिक पार्टियां और
क्लब

8.क) वैचारिक परिणति के प्रशासकीय प्रयास:-

केंद्रीकृत राज्य-सत्ता वैचारिक नियंत्रण के कई माध्यम अपनाती है: शिक्षा से लेकर दंड और वित्त व सम्मान तक

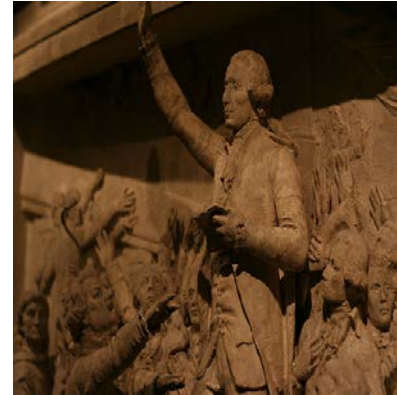
पेरिस की नई सरकारों ने भी धन, बल, शिक्षण, प्रचार और कानूनों इत्यादि का भरपूर प्रयोग नयी संस्कृति ढालने के लिये किया.

इनमें क्रांतिकारी शपथ, दोषारोपण और चोराहों पर न्याय और सज़ाओं का प्रयोग विलक्षण था.

क्रांतिकारी विचारों का आधिकारिक प्रसार क्रांति दशक का न्यायाधिकरण।



क्रांतिकारी सत्ता द्वारा संपूर्ण निष्ठा हासिल करने हेतु चलाई गई शपथ तथा दोषारोपण की प्रथाएँ।



8 ग) वैचारिक परिणति के योजनाबद्ध प्रयास:-

केंद्रीकृत सत्ता के अतिरिक्त, संगठित राजनीतिक दल, पेशेवर राजनीतिक, जन सभाएं, चुनाव प्रक्रिया और वामिता भी सोच को बदलने के उभरते उपकरण थे.

1794 में, जाकोबें दल की करीब 2000 शाखाएं प्रमुख शहरों में खुल चुकी थीं.

कोरदेलिये तथा ओरांजे और सोसायटी ऑफ़ ईक्वल्स जैसे अनेक संगठन भी राजनीतिक द्वंद में शामिल हुए.

बोलशेविक या चीनी क्रांति की तरह फ्रांसीसी क्रांति का एक प्रमुख नेता नहीं था.

जाकोबें और जिरोंदें दलों में जारी बहस



टैनिस कोर्ट ओथ: जनप्रतिनिधियों का सत्ता पर दावा
पेरिस की बोली का प्रोवों जैसी बोलियों पर वर्चस्व

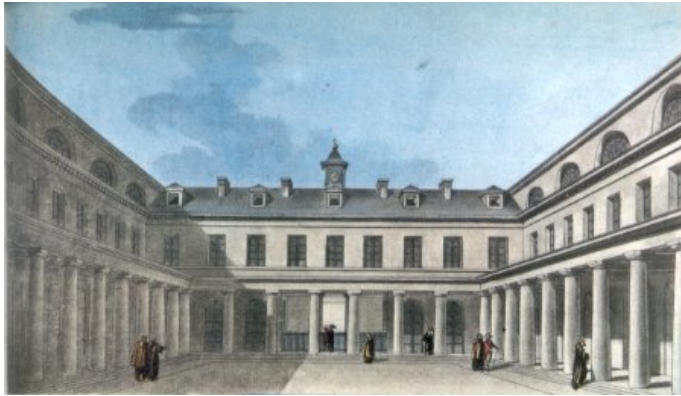


8 ख) अन्य प्रशासकीय प्रयास:-

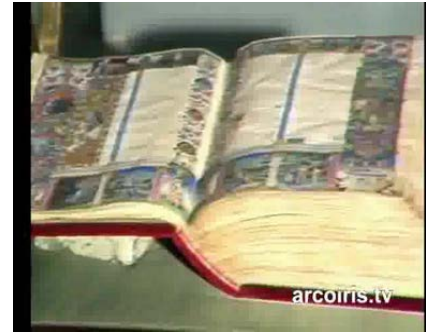
लीसे जैसे शिक्षण संस्थान व लूव्र जैसे संग्रहालय

पुस्तकालयों का पुनर्गठन और पारितोषिक व राजकीय सम्मान का प्रचुर उपयोग

फ्रांस कि शिक्षा प्रणाली को मिली कृतियाँ:
लीसे तथा बिब्लिओथेक



नेपोलियन द्वारा प्रारंभ की गई वार्षिक पदकों की परम्परा।



लूव्र का सर्वोत्तम संग्रहालय के रूप में पुनरुद्धार।



8.ग) वैचारिक परिणति के योजनाबद्ध प्रयास:-

कला की सभी विधाओं का व्यवस्थित प्रयोग भी क्रांतिकारियों ने किया.

नयी सांस्कृतिक धारा को वेग देने वाले कलाकारों में दावीड जैसे चित्रकार, ग्रेतरी जैसे संगीतज्ञ, लील जैसे गीतकार ऊडो जैसे शिल्पकार और ब्यूे जैसे वास्तुकार विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं.

क्रांतिकाल की कलाकृतियों में बुर्बो युग की रोकोको कला का आडम्बर नहीं बल्कि, नव-कलासिकी सादगी, सम्मति और राष्ट्रवादी शौर्य और बलिदान के भाव अधिक नज़र आते हैं.

दावीड की विख्यात नव-श्रेण्य वादी कृति
(वीर सपूर्तों के शव आए ब्रूटस के द्वार)



होरेश:
पान्थेओं का संग्रहालय

ऊदों की अनुपम कृति:
विचारक



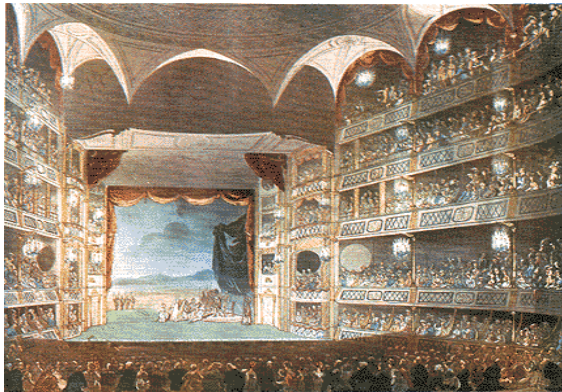
दावीड की रचना: 'द मोथ ऑफ़'



8.घ) वैचारिक परिणति के अन्य प्रयास:-

उच्च कला के अतिरिक्त लोक-रुचि की सभी विधाएं जैसे नाटक, ओपेरा, संगीत, नृत्य, गीत तथा नये-पुराने पर्वों व जलसों का उपयोग भी राजनीतिक चेतना के प्रसार के लिए किया गया.

पेरिस का नाट्य-ग्रह : ओपेरा कोमीक



कर्मन्योल नृत्य गान



बैंड नॅशनल गारद



राष्ट्र को नया गान--मार्सिएज़



इसके अतिरिक्त प्रशासन एवं दैनिक जीवन में भी क्रांति के नये प्रतीकों का उपयोग -ध्वजारोहण से लेकर सिक्कों और पोषाकों तक किया गया. यहाँ तक कि माप-तोल, कैलेंडर, राजकीय मुहर इत्यादि सब तेज़ी से और मूलचूल बदल दिए गए.

सर्वोच्च सत्ता का नया पर्व



फ्रांसीसी क्रांति के प्रभावी सूचक: देश का नया ध्वज;



लिबर्टी की प्रतीक टोपी

नया कैलेंडर और माप तोल के नये पैमाने



8.ग) वैचारिक परिणति के योजनाबद्ध प्रयास:-

परन्तु टेलीविजन और रेडियो के आगमन से पहले, प्रचार का सबसे शक्तिशाली माध्यम मुद्रित प्रकाशन ही थे. इनमें भी, पोस्टरों, पर्चों, कार्टूनों के साथ पुस्तकों, समाचारपत्रों, फेरी-पुस्तिकाओं और धार्मिक ग्रंथों व दार्शनिक स्तर के लेखन सभी अब मौजूद थे.

क्रांति से पहले ही समाचार पत्रों की संख्या 18वीं शताब्दी में चोगुनी हो गयी थी. जो क्रांति दशक में ही तीन गुना और बढ़ गयी.

अखबारों का बढ़ता चस्का ; मुद्रित पोस्टरों से राजनीतिक प्रचार

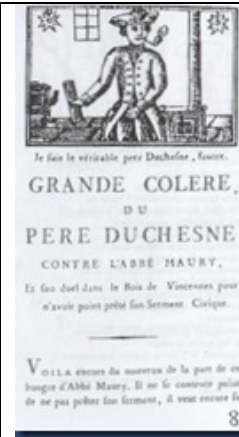


प्रचार में प्रयुक्त प्रश्नोत्तरी; गाँव और कस्बों में बिकने वाला एक अन्य प्रकाशन: अलमनक अर्थात पंचांग।



पर क्रांति ने केवल प्रकाशनों की संख्या को बढ़ाया नहीं बल्कि, इनमें नये तेवर और उत्तेजना भी बढ़ते देखे.

जकोबें हिंसा पर व्यंग



The Former Great Dinner of the Modern Gargantua with His Family, engraving, ca. 1791 - 92. Courtesy Library of Congress, Photo: Jim Reynolds.

1791 तक सामाजिक सौहार्द सुझाता प्रिन्ट; 1792 के बाद सामंतों को ज़ालिम के साथ बेवकूफ भी दर्शाता कार्टून (The Exploits of the Modern Don Quixote)।



9 पुनरावलोकन:-

शक नहीं की सदियों पुरानी फ़्रांस की आंसिया रेजीम को मात्र दो वर्षों में ध्वस्त कर पाना सरल नहीं था. वो भी, राजतंत्र, सामंतों और पादरी तंत्र तथा यूरोप के अन्य कुलीनों को भी एक साथ ललकार कर. फ़्रांस के बागियों ने न केवल यह दुस्साहस किया बल्कि, पराजित होकर भी पुरे यूरोप में विएना व्यवस्था को चुनोति देने वाली भावी क्रांति के बीज भी बो दिए.

फ़्रांस की क्रांति से पहले कोई और बगावत ऐसा व्यापक प्रभाव नहीं छोड़ पायी थी. चाहे वो सोलोन या जान बाल के प्राचीन विद्रोह हों या आंग्ल और अमरीकी क्रांति के सफल आधुनिक इन्कलाब. दूसरी और अधिकतर क्रांतियाँ दबा दी गयी. स्वयं फ़्रांस में सात दशक लग गये. गणतंत्र को स्थिर होने में; क्रांति अपने ही संतानों को निगलती रही.

१८३० की क्रांति



वियेना कांग्रेस



आंग्ल क्रांति के लेव्लेर नेता जॉन लिल्लबर्न

गांधी का अहिंन्सवादी समाधान



पुनरावलोकन:-

अंततः गणतंत्रवाद और धर्मनिरपेक्ष सफल हुए.

परन्तु, इसमें भी ,योगदान केवल 1789 की क्रांति का नहीं बल्कि, औद्योगीकरण, शिक्षा के विस्तार, सुधारवादी संगठनों व विचारकों का भी. हां, इस वृहद परिणति में फ्रांसीसी क्रांति ने एक अहम् उत्प्रेरक का कार्य अवश्य किया.

परंतु यही तबदीली, स्वीडन, ब्रिटेन इत्यादि काफी कम हिंसा के साथ संभव हुई.

तो क्या, दस लाख इंसानों की हत्या सामंतवाद और राजतंत्र की समाप्ति के लिए चुकाई गयी बड़ी कीमत थी?

एशिया और अफ्रीका के उन हिस्सों में, जहां नृजातीय भेदों पर अक्सर गले काट लिए जाते हैं, और जहां गाँधी ने शायद इसीलिये, न्यूनतम हिंसा का मार्ग सुझाया, यह प्रश्न और भी विचारणीय है.

विचारणीय प्रश्न:-

1. फ्रांसीसी क्रांति से उत्पन्न सांस्कृतिक बदलाव का सबसे महत्वपूर्ण पहलू नई राजनीतिक जागरूकता तथा गणतंत्रवादी सोच का विकास था। व्याख्या कीजिये।
2. फ्रांसीसी क्रांति द्वारा प्रसारित गणतंत्रवाद ऐतिहासिक तो था परंतु इसके कुछ नकारात्मक पहलू भी थे। इस कथन की समीक्षा कीजिये।
3. नागरिकों की राजनीतिक सक्रियता तथा गणतंत्र में आस्था को बढ़ाने के लिए क्रांतिकारी गणतंत्रवादियों द्वारा उपयुक्त सभी विधाओं एवं माध्यमों को सूचीबद्ध करते हुये किन्हीं दो पर विस्तृत टिप्पणी दीजिये।

ग्रन्थ सूची

- William Doyle, *The Oxford History of the French Revolution*, Oxford, 1989.
- Colin Jones, *The Longman Companion to the French Revolution*, Harlow, 1988.
- William Doyle, *Origins of the French Revolution*, Oxford, 1999.
- Alexis Tocqueville, *The Old Regime and the French Revolution*, 1856.
- George Rude, *Revolutionary Europe, 1783-1815*, 1964.
- Georges Lefebvre, *The Coming of the French Revolution*, Princeton, 1988.
- Albert Soboul, *Understanding the French Revolution*, 1998.
- Alfred Cobban, *The Social Interpretation of the French Revolution*, Cambridge, 1999.
- Francois Furet, *Interpreting the French Revolution*, Cambridge, 1981.
- Peter M. Jones ed, *The French Revolution: Social and Political Perspectives*, Arnold, 1996.
- K.M. Baker ed. *The Political Culture of the Old Regime*, 1986.
- T.C.W. Blanning, *The French Revolution: Class War or Culture Clash*, Basingstoke, 1998.
- Lynn Hunt, *Politics, Culture and Class in the French Revolution*, University of California Press, 1984.
- Ronald Schechter ed, *The French Revolution: Essential Readings*, Blackwell Publishers.
- Gary Kates ed, *The French Revolution*, Routledge, 1998.
- Kafker and Laux ed. *The French Revolution: Conflicting Interpretations*, Oxford, 1988-94.
- Emmet Kennedy, *A Cultural History of The French Revolution*, Yale Univ. Press, 1989.
- Colin Lucas et al eds. *French Revolution and the Creation of Modern Political Culture: Vols.I-IV*, 1988-94.
- Francois Furet, *Revolutionary France, 1770-1870*, 1992.
- Nigel Aston, *The French Revolution, 1789-1804*, Authority, Liberty,
- देवेश विजय. फ्रांसीसी क्रांति के सांस्कृतिक पहलू :हिन्दी माध्यम
कार्यान्वय निदेशालय,2013

राष्ट्रीय गारद का बैंड



